शास्त्री द्वितीय खण्ड, राष्ट्रभाषा हिन्दी, अ० द्वि० - पत्र
'निबंध माला' - गद्य खण्ड
शीर्षक - 'पेट', लेखक - पंडित प्रताप नारायण मिश्र

लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर :-

प्रश्न :- 'पेट' की महिमा का वर्णन लेखक ने किस रूप में किया है?

उत्तर :- पंडित प्रतापनारायण मिश्र के अनुसार पेट की महिमा अपरम्पार है। यह दो वर्णों का शब्द पिण्ड से ब्रह्माण्ड तक को नियंत्रित करता है। यह इतना व्यापक है कि इसमें कितने ही ब्रह्माण्ड समाये हुए हैं और ये ब्रह्माण्ड भी ब्रह्म देवता के उदर में ही स्थान पाने वाले हैं। पेट की शायद इसी महत्ता को स्वीकार करते हुए कदाचित् भगवान श्रीकृष्ण ने भी अपना नाम दामोदर रखवाया। इस पेट का बन्धन इतना बड़ा है कि इस रस्सी से कोई बच नहीं सकता है।

प्रश्न :- लेखक ने 'पेट' को सुन्दर और सामर्थ्यवान क्यों कहा है?

उत्तर :- निबंधकार पंडित प्रताप नारायण मिश्र 'पेट' को सुन्दर और सामर्थ्यवान इसलिए मानते हैं कि प्राचीन कालीन सुन्दरियाँ दामोदरी अथवा कृशोदरी कहलाती थी। यह पेट शक्ति का ऐसा पर्याय था कि राक्षसों का बन्धु 'सहोदर' और आर्यों का सबसे बलशाली पुरुष 'वृकोदर' कहलाता था। धार्मिक दृष्टिकोण से भी इस पेट का कम महत्व नहीं है। माताएँ अपनी संततियों को नौ मास पेट में ढोती हैं, इसलिए धरती पर इनसे अधिक पूज्य दूसरा कोई देवी-देवता नहीं है।

प्रश्न :- लेखक के अनुसार 'पेट' की आँच कैसी होती है?

उत्तर :- 'पेट' की आँच बड़ी कड़ी होती है। इसे सहना बड़ा कठिन है। इसकी प्रचण्डता के समक्ष लोक और धर्म-कर्म सभी नतमस्तक हो जाते हैं। यदि यह पेट बिना परिश्रम के भरने लगे तो इससे कमजोरी भी उत्पन्न होती है। आदमी की तबियत रंगीन हो जाती है और वह तरह-तरह के हसीन सपने देखने लगता है। निबंधकार का स्पष्ट मानना है कि मानव को परिश्रम करके उपार्जन करना चाहिए। ऐसा करने से मनुष्य का विचार शुद्ध रहता है। वह पराश्रित नहीं रहता है।

डॉ० देव चरण प्रसाद
एसो० प्रो० हिन्दी
रा०उ० सं० महावि० सुखसेना, पूर्णियाँ
18|08|20

शास्त्री प्रथम खण्ड, राष्ट्रभाषा हिन्दी, अ०द्वि० - पत्र

जयद्रथ-वध - काव्य खण्ड

कवि - श्रीमैथिलीशरण गुप्त

करता पयोदों को प्रभंजन शीघ्र अस्त व्यस्त ज्यों,
करने लगे तब ध्वस्त अर्जुन शत्रु-सैन्य समस्त त्यों,
वे रिपु-शिरों को काटकर रणभूमि यों भरने लगे -
रण-चण्डिका पूजन सरोजों से यथा करने लगे ॥

भावार्थ :- प्रस्तुत पद्यांश में पांडवों और कौरवों की सेना के बीच घमासान युद्ध का वर्णन किया गया है। इसमें विशेष रूप से अर्जुन की प्रहार शक्ति का वर्णन हुआ है। कवि कहता है कि जिस प्रकार तेज आँधी शीघ्र ही बादलों को अस्त-व्यस्त कर देता है उसी प्रकार अर्जुन समस्त कौरव दल की सेना को करने लगे। वे शत्रुओं के सिरों को काट-काट कर रणभूमि को इस प्रकार भरने लगे मानो वह रण की देवी चँडिका का पूजन मुख कमल से कर रहे हों।

कवि इस पद के द्वारा रणभूमि में अर्जुन के युद्ध कौशल का प्रभावशाली ढंग से वर्णन किया है। अर्जुन प्रतापी योद्धा के समान युद्ध भूमि में अपने कौशल और पराक्रम का प्रदर्शन किया है।

डॉ० देवचरण प्रसाद
एसो० प्रो० हिन्दी
रा० कृ० सं० महावि० सुखसेना, पूर्णियाँ

18.08.20

उपशास्त्री, राष्ट्रभाषा हिन्दी, अ० द्वि० - पत्र

द्वितीय - भाग - 2 - पद्य खण्ड

शीर्षक - 'छप्पय', कवि नाभादास

प्रश्न :- 'छप्पय' शीर्षक पदों का सारांश अपने शब्दों में लिखें।

उत्तर :- भक्तकवि नाभादास का यह छप्पय छन्द उनकी प्रसिद्ध रचना भक्तमाल से संकलित की गई है। ~~छप्पय~~ छप्पय शीर्षक पद कबीरदास एवं सूरदास पर लिखे गये हैं। छप्पय एक छन्द है, जो छः पंक्तियों का गेय पद होता है। यह छप्पय छन्द नाभादास की सारग्राही चिंतन के उदाहरण हैं।

प्रस्तुत छप्पय में वैष्णव भक्ति की नितांत भिन्न दो शाखाओं के इन महान भक्त कवियों पर लिखे गये छन्द हैं। इसमें इन कवियों से संबंधित अब तक के सम्पूर्ण अध्ययन-विवेचन के सार-सूत्र स्पष्ट अंकित हैं। इन पंक्तियों में कवि की दूर-दृष्टि दिखायी पड़ती है।

पाठ के प्रथम छप्पय में नाभादास ने आलोचनात्मक शैली में कबीर के प्रति अपने भाव व्यक्त किये हैं।

कवि के अनुसार कबीर ने भक्ति विमुख तथाकथित धर्मों की धज्जी उड़ा दी है। उन्होंने वास्तविक धर्म को स्पष्ट करते हुए योग, ~~य~~ यज्ञ, व्रत, दान और भजन के महत्व का बार-बार प्रतिपादन किया है। उन्होंने अपनी सबदी, साखियों और रमैनी में क्या हिन्दू और क्या तुर्क सबके प्रति आदर का भाव व्यक्त किया है। कबीर के वचनों में पक्षपात नहीं है। उनमें लोक मंगल की भावना है। संत कबीर मुँह देखी बात नहीं करते हैं। उन्होंने वर्णाश्रम के पोषक षट्-दर्शनों की दुर्बलताओं को तार-तार करके दिखा दिया है।

दूसरे छप्पय में कवि नाभादास ने सूरदासजी का कृष्ण के प्रति भक्तिभाव प्रकट किया है। कवि का कहना है कि सूर की कविता सुनकर कौन ऐसा कवि है जो उनके साथ हामी नहीं भरेगा। सूरदास की कविता में श्रीकृष्ण की लीला का वर्णन है। उनके जन्म से लेकर स्वर्गधाम तक की लीलाओं का मुक्त गुणगान किया है। सूरदास की कविता में गुण-माधुरी और रूप-माधुरी सब कुछ भरी हुई है। सूरदास की दृष्टि दिव्य थी। वही दिव्यता उनकी कविताओं में भी प्रतिबिंबित है। गोप- गोपियों के संवाद में अद्भुत

शेष आगे -

Date: ________ Page: ______

प्रीति का निर्वाह दिखायी पड़ता है। शिल्प की दृष्टि से उक्ति-वैचित्र्य और अनुप्रासों की अनुपम छटा सर्वत्र दिखाई पड़ती है।

डॉ० देव चरण प्रसाद
एसो० प्रो० हिन्दी
रा०उ० सं० महावि० धुरकसेना, पूर्णियाँ

1अ०अ20